FEELING OF DESPAIR

निराश भावनायें

NIRAASH BHAWNAAYEN

FEELING | EXPRESSION | REFLECTION | हिन्दी

DR RAM LAKHAN PRASAD & MRS SAROJ K PRASAD

Feeling of Despair

निराश भावनायें

NIRAASH BHAWNAAYEN

This publication is dedicated to

मेरे पिताजी

मेरी माताजी

मेरा परिवार

जब तक है यह जिन्दगी, फुर्सत न होगी काम से

कुछ ऐसा समय निकालो, प्रेम कर लो राम से।

निराश भावनायें

Dr. Ram Lakhan Prasad

&

Mrs Saroj Kumari Prasad

First Published January 2010

Reprint 2013

© The Prasad Family of Bellbowrie

76 Ghost Gum Street, Bellbowrie, 4070
Brisbane , Qld., Australia.
ralmlakhanprasad@gmail.com

विषय सूची

१. **भूमिका** - डा. राम लखन प्रसाद

२. **दो शब्द** - सुरेन्द्रा प्रताप - हिन्द रतन

३. **प्रार्थना** - अब सौप दिया है इस जीवन का सब भार तुम्हारे हांथों

४. **चुनी हुई कवितायें** :- .

.मेरी जन्मभूमि बोतीनी	.मेरे आजा आजी
.मेरे नाना नानी	.गरीबों की सुनो और सेवा करो
.जीवन के सफर मे राही	.अभी जाने की देरी क्या है
.हमारे रिश्ते नाते	.मेरा साथ देना हमसफर
.खास भेंट-सरोज के तरफ से	.पूजा कर के शान्ति पाओ
.मेरा बसेरा	.एक कप चाय हो जाये
.प्राणेष हमारा	.हमारी प्रनीता
.हर्षीता	.रोहितेश आ गया आँगन में

५. **छोटी कहानियां** :- . प्यार का बन्धन .लौट के आजा मेरे लाल .जीना इसी का नाम है .प्रीत किये सुख होय .साजन की पड़ोसन .आज नहीं तो कल

६. **व्यंगात्मक रचनायें** :- .मथुरा के कंस .उसका रोना गजब हो गया

७. **कुछ ज्ञान ध्यान की बातें** :- .शिष्टाचार की बातें .ज्ञान गोष्टी

८. **गिरमिट की गाथा** – बस्ती से बोतीनी, हमारे पूर्वजों की कथा

९. **मेरे अपने विचार** - हिन्दू धर्म में परिर्वतन लाना चाहिये

११. **लेखकों की जीवनी** – सरोज और लखन के सौजन्य से

भूमिका

उम्र ढल चुकी है हमारी । कहानी और कवितायें लिखने की चाह हमें बचपन से थी पर यह मेरा यह शौक तब बदलाव खा गया जब १९६० में मैं एक अध्यापक बन गया था । हमारी कहानियां और कवितायें फीजी के कई साप्ताहिक समाचार पत्रों में समय समय पर छप चुके हैं।

उन दिनों में जागृति, फीजी समाचार, शान्तिदूत और रेड़ियो फीजी ने हमारी रचनाओं को बड़ा सम्मान दिया था और मैं इसके लिये उन सबका बहुत आभारी हूं।

मैं अपनी सभी पुरानी कहानियों और कविताओं को यहां इक्ट्ठा तो नहीं कर पाया हूं पर नई रचनाओं को बड़े शौक से प्रस्तुत कर रहा हूं । अगर पाठक हमारी पुरानी रचनाओं की तलाश करें तब हमारी सब पुरानी रचनायें अतीत के समाचार पत्रों के पन्नों में जरूर मिलेंगी । फीजी के आरकाईव्स में तो जरूर होंगी ।

इन रचनाओं को मैंने अपने घर की लक्ष्मी सरोज के प्रोत्साहन से लिखा है और हमारे चार बच्चे : प्राणेष, प्रनीता, हर्षीता और रोहितेष और उनके परिवार ने भी अपना बड़ा सहयोग दिया है । इन सबके योगदान के लिये मैं तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं।

इन रचनाओं को एक पुस्तक के रूप में बनाने का ख़्याल भी हमारे परिवारवालों और दोस्तों ने हमें दिया है। पाठकगण इन रचनाओं में बहुत मनोरंजन पायेंगे और उन्हे कुछ ज्ञान ध्यान की बातें भी मिलेंगी।

पर सबसे दिलचस्पी रखने वाली हमारी व्यंगात्मक कहानियां हैं जिन्हें पढ़कर आप आनन्द तो पायेंगे ही पर इनमें छिपी कई समाज और देश की दशा को भी परख सकेंगे।

जो भी हो, मैं आशा करता हूं की आप सब इन रचनाओं से उतना ही मजा उठायेंगे जितना प्यार से इन्हे मैंने रचा है। एक बात याद रहे की यह सब कल्पित घटनायें, नाम और स्थान हैं। इनका सम्बन्ध किसी से, कहीं से और कैसे भी असली वातावरण से नहीं है।

इतना होते हुये भी अगर कोई भी मेरी चर्चा या विचार आपको नहीं भाती हो तो उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूं। इनको मेरी गलती न समझियेगा क्योंकि ये सब मेरे अपने निजी अनुभव, मति, कल्पना और समझ हैं। मेरी भावनाओं से आपको सहमत होना या न होना यह आपकी मर्ज़ी है।

इस पुस्तक के संग्रह के लिये मैं उन सभी उदार सज्जनों और देवियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरी पहली कापियों को पढ़कर उन पर अपनी अनमोल टीका टिप्पणी की थी मैं ने उनके विचारों को लेकर जरूरी संशोधन भी किया है। हिन्द रतन सुरेन्द्रा प्रतापजी ने हमारे लिये 'दो शब्द' लिखकर मुझ पर और पाठकों पर बड़ी कृपा की है। मेरे छोटे भाई बिजेन प्रसाद ने भी मुझे बहुत सहयोग प्रदान किया है। इन सबको मैं बहुत धन्यवाद देता हूं।

क्योंकि हमारे यहां अब हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या कम होती जा रही है यह हमारा निवेदन है आपसे की आप इन रचनाओं को खुद पढ़िये और दूसरों को पढ़कर सुनाईये तभी आप इनका पूरा मजा ले सकेंगे । आप सब की जय हो !

राम लखन प्रसाद *१८ . ०१ . २०१०*

हिन्द रतन सुरेन्द्रा प्रताप के दो शब्द

"तू रख भरोसा भगवान में तेरी नैया चलेगी आंधी और तूफान में "

" न हम कुछ हंस के सीखे हैं न कुछ रो के सीखे हैं, जो कुछ भी सीखे हैं बस अपने बड़ों के साथ हो के सीखे हैं "

शायद यही दो विचारों को लेकर डाक्टर राम लखन प्रसाद जी ने अपने कई एक मुसीबतों का सामना करते हुये जिन्दगी की इस मोड तक पहुंचे हैं। इस पुस्तक के हर एक रचनाओं में उन्होंने ऐसी जान डाली है कि अगर आप पहले पन्ने को पढ़ेगे तो मन यही चाहेगा की कब हम पूरी किताब को पढ़ डालें।

इन रचनाओं में ऐसी सीख है जो बच्चों से लेकर बूढ़ों को भाएगी। पढ़ते समय ऐसा महसूस होगा कि यह सब हमी पर ही बीती है। इन सभी रचनाओं में न तो सिर्फ प्यार की झलक है बल्कि कठिनाईयों के समय के कई नमूने दिये गये हैं फिर उनका समाधान इतना सुन्दर भाव से प्रस्तुत किया गया है की इन को पढ़ने वाले हर एक प्राणी को उसके अपने जीवन मे उतारने में कोई आपत्ति नहीं होगी। यही इस पुस्तक के लेखक की असली पहचान है।

सदियों से हम हिन्दी में छोटी कहानियों और कविताओं को पढ़ते आ रहें हैं पर अभी हाल से इनके महत्व में हमारे नये लेखकों ने चार चांद लगा दिया है। डाक्टर राम लखन प्रसाद की इन भावना से भरी भिन्न-भिन्न रचनाओं ने तो हमारे पाठकों पर कमाल का जादू कर दिया है। जितना शौकीन यह खुद दिखते हैं, ठीक उतनी ही मजेदार और रसीली इनकी यहां पर प्रस्तुत की हुई सभी

रचनायें हैं। पाठक एक बार पढ़ते हैं और फिर कई बार पढ़ने के लिये उत्कृष्ट हो उठते हैं। इतना ही नही हमने देखा है कि कई पाठक इन सुन्दर मुहावरों से भरी रचनाओं को बड़े शौक से अपने मित्रों और पारिवारिक जनों को पढ़कर सुनाने में भी मजा लेते हैं।

इस पुस्तक में छपी हुये कुछ रचनाओं को शायद आप शान्ति दूत या जागृति में पढ़ चुके होंगे पर आज इनको लेखक ने एक नया मोड़ दे दिया है। डाक्टर साहब ने उनमें कई संशोधन लाकर ओर उनमें आधुनिकता निखार कर उन्हे खूब सुसज्जित और अपनी नयी पहचान दे दी है। उनकी सभी छोटी कहानियों की पृष्ठभूमि फीजी है क्योंकि उन्होने वहां अपना एक लम्बा समय गुज़ारा है और उन्हें वहां के वातावरण तथा वहां की सामाजिक, धार्मिक और संसारिक स्थिति का बहुत ही अनुभव है।

इन्होंने अपने लेख में फीजी की सभी सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालने की बड़ी बारीकी से कोशिश की है इसीलिये इनकी कहानियों में एक अपनापन नज़र आ रहा है।

डाक्टर साहब का पारिवारिक जीवन बहुत ही प्रतिष्ठा से भरा रहा है और आज वे इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान देकर अपने चार बच्चों के परिवार को सफलता के एक नये मोड़ पर पहुंचा दिया है इसीलिये उनकी इस पुस्तक में छपी कविताओं में हम भिन्न-भिन्न परिवार के लोगों की चर्चा होते देख रहें हैं। उनके सभी प्रकाशन में जटिल प्रेम और महान वेदना नज़र आती है। पाठक इन पर गौर करके अपने जीवन में भी वही फूल खिला सकते हैं। उनके नाती-नातिनों और पोता-पोतियों की भावनायें भी बडी मजेदार हैं।

मैं इन के व्यंगात्मक रचनाओं से भी प्रभावित हुआ हूं और इन के पूर्वजों की गिरमिट की गाथा तो हृदय को हिला देने वाली सच्चाई से भरी है, बडी दर्दनाक और दारूण व्रतांत है । फिर कुछ इनके अपने निजी विचार भी छपे हैं जिनको पढ़कर पाठक शायद चौंक पड़े पर याद रहे की सच्चाई छुप नहीं सकती है बनावट की वसूलों से और खुशबू आ नहीं सकती है कागज़ के फुलों से । आपको पढ़ने में जो मजा आयेगा उससे ज्यादा शायद आपको इन सब भावनात्मक रचनाओं को मथने से सुकून मिलेगा ।

मुझे पूरा विश्वास है की हम सब ऐसे एक और हिन्दी प्रकाशन का स्वागत करेंगे तथा हिन्दी भाषा को सही बढावा देते रहेंगे । मेरे जैसे एक हिन्द रतन का आर्शीवाद डाक्टर राम लखन प्रसाद के साथ सदा रहा है तथा मेरी यही प्रार्थना है की उनकी यह रचना दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति करती रहे । उनका उद्देश आपका मनोरंजन करना है इसलिये आप उनकी रचनाओं को पढ़ें पढ़ायें और अपने चित को प्रसन्न करें । यही उम्मीद लेकर हम उनका और उनकी भावनाओं से भरी रचनाओं का समर्थन करते हैं ।

मैं यही आशा रखता हूं कि आप सब पाठक भी इसको पढ़ कर न तो सिर्फ आनन्द लेंगे बल्कि अपने यार-दोस्त और परिवार को प्रोत्साहित करेंगे कि यहां गंगा जल जैसी लाभदायक रचना बहती है और चलो हम सब इस में गोता लगा लें ।

सुरेन्द्रा प्रताप , हिन्द रतन , ब्रिसबन , ओस्ट्रेलिया

प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें मैं पा जाऊं
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, जो जल में कमल का फूल रहे
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, भगवान तुम्हारे चरणों में
या मैं जग से दूर रहूं, और जग में रहूं तो ऐसे रहूं
इस पार तम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तेरे चरणों का मैं पुजारी रहूं
इस पूजक की एक-एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में
जब-जब संसार का कैदी बनूं, निश्काम भाव से करम करूं
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारे हाथों में
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर (नारी) हूं आप नारायन हो
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

मेरी जन्म भूमि बोतीनी

गंगा सी नदी बह रही और पर्वत भी हिमालय सा लगता है
हुआ था जन्म यहीं हमारा हमें बोतीनी नाम सुन्दर लगता है
दुनिय भर मैं घूम के आया पर खुशहाली ऐसी कहीं न पाया
सब सुख देने वाली जन्म भूमि से अब कभी न छूटे मेरा नाता
हरे वृक्ष और जंगल झाड़ी ,कच्ची सड़क पर दौड़े पुरानी गाड़ी
खेतों में कई फसल लहराये ईख, अनरस और सभी तरकारी
शाला के बाद मैं किसानी करता और साथ में थे बाप महतारी
छोटे-छोटे नाले बहने लगते थे जब बड़ी बरसात आ जाती थी
खेल-कूद कर उन झरनों में मेरी बचपन पुलकित हो जाती थी
मुझे याद हैं वो पथरीले खाही जहां नयबी के वृक्ष सुसज्जित थे
फल-फूल तोड़ते और मीन पकड़ते होते कभी न लज्जित थे
मैना बुलबुल कबूतर की भरमार लगी थी धान के खलिहानों में
कुछ फसल वे खा जाते पर मार भगाते हम उन को गुलेलों से
ऐसी सुन्दर दृश्यों को देख, मैंने अपना पच्चीस साल बिताया
और किसी वस्तुओं से ऐसा सुख हमें कभी भी नहीं मिल पाया

भांति-भांति के तरुण लता और मन भावन मैदान भरे पड़े थे
खेल-कूद तो होते ही रहते क्योंकि सुदामा जैसे मित्र बड़े थे
इन सब शुभ कामों को देख सुनकर मन मेरा प्रसन्न होता था
धन्य है तुम्हारा प्रभू ,सांसारिक दुःख सब छिन में खो जाता था
आज भी जब मैं बोतीनी जाता उस पर्वत के पास या नदी तट पर
होता हूं मैं खुश बहुत और मधुर मुस्कान भी आ जाती है होठों पर
मन में अनेक ख्याल आ धमकते, जब बोतीनी की यादें सामने आती
गुन-गुन करते रकम-रकम के भौंरे,याद उस भूमि की कभी न जाती
सब सगे सम्बन्धी अब नहीं रहे, और अपने पड़ोसी भी सब चले गये
यह लम्हे जब याद आते हैं, तब वहां की सुमधुर दृश्य हमें सताये
माता-पिता ने पाला-पोसा और हुनर दिया पर कभी नही वे अघाये
लखन की नजरों से बोतीनी देखो सरोज तब तुम्हारा भी मन भाये

हमारे आजा आजी

(जया, मीरा, रोहन और आशा के मन की बातें)

आजा हमारे बडे प्यारे हैं, पर आजी भी सुन्दर लगती हैं

उनके पास अपने बच्चे नही हैं हमको ऐसी ही लगती हैं

उनके बच्चे सब बड़े हो गये अब हम आ गये उनके जीवन में

काम तो वे कुछ करते नहीं, लाख खुशी लाते हैं हमारे जीवन में

बूढ़े हो चले हैं और अब दौड-धूप खेल-कूद पूरा कर नही पाते हैं

ट्रेड मिल पर चलते हैं वे पर कभी-कभी हम को दूकान ले जाते हैं

अपने रुमाल की गांठी खोल कर, कुछ पैसा हमको भी दे देते हैं

हम भी बडे शौक से उनके पैसे से अपना खरीद बीन कर लेते हैं

आजा तो थोड़े पतले-दुबले हैं, पर आजी हमारी तन्दुरुस्त लगती हैं

आजी हमे कपड़े पहनाती, खाना खिलाती और जूते भी पहनाती हैं

आजा हमें कम्प्यूटर तो सिखाते हैं, पर काम बहुत करवाते हैं

उनके बागीचे में कई पेड़ खिले हैं, हमको यह सब मन भातें हैं

जब उनके साथ हम घूमने जाते तब वे रुक-रुक कर चलते हैं

सांस फूलने लगती है उनकी, वे पानी पीते और दवा भी खाते हैं
कोई जल्दी तो उनको रहती नही आहिस्ते-आहिस्ते करते सब काम
जब हम घर में छिप जाते हैं तो वे चिल्लाते लेकर हमारा नाम
उनका चश्मा तो बडा अजीब है, हमको तो कुछ दिखाता ही नहीं
उनके बनावटी दांत जब बाहर निकले,बात तो कुछ समझाता नहीं
आजा-आजी बड़े होशियार हैं, उनके पास हर सवाल के जवाब हैं
भगवान की शादी क्यों नही हुई ? ऐसे सवाल का कहां जवाब है
कुत्ते क्यों बिल्ली को खेदते है ? जब हम ऐसे सवाल रख देते हैं
जवाब उनका सरल होता है, शादी तो भगवान कर ही नही सकते हैं
बिल्ली कुत्ते को चिढ़ाती रहती है पर भगवान सभी जगह पर रहते हैं
उनकी कहानियां और हमे सुलाने वाले गाने बहुत ही रसीले लगते हैं
कभी नही वे हिचकिचाते, कहानी और गाने कई बार दुहराते रहते हैं
जब कभी वे झुक कर चीज़ उठाते हैं तब उनकी हवा निकल जाती है
यह आवाज़ कहां से आई ? आजा कह देते की रेडियो में कोई गाता है
यह हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है, कि ऐसे आजा-आजी हमको मिले हैं
हमारी प्रार्थना है की वे सदा सुखी और खुश रहें हम यही मनाते हैं

हम चाहे कितने बदमाशी करें पर लोरी गाकर प्यार से हमें सुलाते हैं
एक दिन हम ने जब छोटू से पूछा की तेरे आजा-आजी कहां रहते हैं ?
छोटू का कहना है, वे एयरपोर्ट पर रहते हैं, जब चाहे हम ले आते हैं
मेरे आजा तो इस दुनियां के सब लोगों से गुनवान आदमी लगते हैं
मेरी आजी तो उनसे भी अच्छी उनके भोजन हम चाट कर खाते हैं
बहुत प्यार करते है वे हमसे, और हम भी उनको बहुत चाहते हैं
आजा-आजी रहें सदा साथ हमारे, यही तो हम सब दिन चाहते हैं
एक वादा हम सब करते हैं उनसे, और इस वादे को सदा निभायेंगे
खूब पढ़े लिखे, होशियार बने, मौज करे पर हम कभी नहीं घबरायेंगे ।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below